ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा हृणीयथाः। साम 227
हे मनुष्य क्रोध मत कर।
O ye Human! Never be angry or wrathful.

वर्ष 37, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 जून, 2014 से रविवार 15 जून, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, सै.7, रोहिणी दिल्ली में

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के प्रान्तीय शिविर का अयोजन 23 मई, 2014 से 1 जून 2014 तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 300 से अधिक युवकों ने भाग लेते हुए आर्य वीर श्रेणी को प्राप्त किया। वहां संकल्प लिया कि हम आर्य बन दैनिक शाखाएं लगायेंगे। व समाज में फैली अव्यवस्था व कुरीतियों को दूर करेंगे। इस शिविर में 40 प्रतिशत युवक संगठन की नियमित शाखाओं से थे एवं 60 प्रतिशत युवा विभिन्न प्रान्तों, आर्य परिवारों एवं व गैर आर्य परिवारों से थे।

शिविर में वरिष्ठ शिक्षक व दिल्ली प्रान्त के बौद्धिकाध्यक्ष ब्र. संदीप आर्य व प्रधान शिक्षक श्री दिनेश आर्य के नेतृत्त्व में लगभग 13 शिक्षकों के माध्यम से आर्यवीरों को बौद्धिक व शारिरिक प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में सुव्यवस्था के लिए श्री जय किशन गुलिया जी, श्री महेन्द्र जी, पवन आर्य जी (व्यवस्था मंत्री) राजेश आर्य जी, संजय आर्य जी, तेजवीर आर्य, हर्ष आर्य, के मार्ग दर्शन में लगभग 10 कार्यकर्ताओं में सभी व्यवस्थाओं को अच्छे प्रकार से पूर्ण किया।

शिविर का समापन 1 जून 2014 को सांय 5 बजे महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच.) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि श्री रमेश अग्रवाल (अग्रवाल मूवर्स एण्ड पैकर्स) एवं श्री बलदेव राज सेठ, श्री ज्ञान चन्द गोयल, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्रीमती नीलम गोयल (पार्षद रोहणी जोन) व विभिन्न समाजों के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। तथा शिविर में भाग लेने वाले युवकों के परिवारों के सैकड़ों लोग भी उपस्थित थे।

शिविर में परेड निरीक्षण श्री रमेश अग्रवाल जी ने किया तथा उनके साथ ब्र. राज सिंह आर्य, जगदीश कामरा व मनोज गोयल जी ने सहयोग किया। मुख्य उदबोधन श्री रमेश अग्रवाल जी द्वारा किया गया। एवं सर्वश्रेष्ठ आर्यवीरों को पुरस्कृत किया गया।

संगठन के सर्वोच्च सम्मान इस वर्ष का "आर्यवीर रत्न" श्री सुरेश आर्य (व्यायाम शिक्षक) को देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में सामूहिक रूप से परेड, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, दण्ड बैठक, नियुद्धम को व्यायाम शिक्षक श्री दिनेश आर्य, श्री धर्मवीर आर्य व लक्ष्य आर्य व शंकर आर्य के मार्ग दर्शन में बहुत ही सुन्दर रूप से प्रदर्शित किया गया। समारोह में श्री प्रेम आर्य व श्री राजू आर्य के नेतृत्व में राष्ट्रीय विषयों पर बहुत ही सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की गई। अन्त में कमाण्डो ट्रेनिंग का शानदार प्रदर्शन दिखाया गया।

पूरा प्रशिक्षण शिविर व मंच संचालन के कार्यक्रम को श्री जगबीर आर्य (संचालक) श्री सुन्दर आर्य (सह-संचालक) बृहस्पति आर्य (महामंत्री) व श्री जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष) द्वारा सुव्यवस्थित चलाया गया। अन्त में संगठन द्वारा मंच से आये हुए सभी शिक्षकों, अतिथियों, कार्यकर्ताओं, स्कूल के अधिकारियों व आर्यवीरों का धन्यवाद किया गया। समारोह के उपरान्त सभी के लिए प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

शेष त्रिम झांकी पृष्ठ 4 पर

केरल में आरम्भ हो रहा है आर्यसमाज का नया इतिहास

विस्तृत समचार एवं चित्रमय झांकी अगले अंक में

वेद-स्वाध्याय

आज हम विजयी हुए

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम्। जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु।। ऋग्वेद 10/164/5

अर्थ—**(वयम्)** हम **(अनागसः)** पापरहित (अभूम) होवें तो **(अद्य)** आज ही **(अजैष्म)** शत्रु को जीत लें **(च)** तथा **(असनाम)** हमारी सुख-कामना भी पूरी हो जाये। **(जाग्रत)** जाग्रत अवस्था में किया पाप **(स्वप्नः)** स्वप्नावस्था में जो **(पापः संकल्पः)** पाप से युक्त संकल्प जिस मनुष्य का हो वह **(यं द्विष्मः)** जिससे हम द्वेष करते हैं **(तम् स ऋच्छतु)** उसी को प्राप्त होवे **(यः नः द्वेष्टि)** जो हमसे द्वेष करता है।

प्रायः देखा जाता है कि पाप करने वाला एकान्त या अन्धकार की तलाश करता है जहाँ उसे कोई न देख पाये। कहावत है—'चोर के पैर नहीं होते।' जरा-सी आहट हुई और वह भाग खड़ा होता है।

इससे यह समझा जा सकता है कि जहाँ परिवार, बन्धु-बान्धव, समाज, राजा का भय हो, वहाँ लोग पाप करने से डरते हैं और एकान्त या अन्धकार को ढूंढते हैं।

कई बार विवश होकर भी पाप किया जाता है यथा—**बुभुक्षितः किं न करोति पापम्** भूखा व्यक्ति कौन सा पाप नहीं करता। चोरी-डकैती डालने वाले भी अपने परिवार का पेट भरने के लिये ही इस कर्म में प्रवृत्त होते हैं।

कुछ लोग धर्म के नाम पर दूसरों को पीड़ित और पशुओं की हिंसा करते देखे जाते हैं क्योंकि उनको यह बताया जाता है कि अमुक कर्म करने से तुम्हें यह पुण्यरूप फल मिलेगा। अथवा तुम्हारी कामनायें पूरी होंगी या परमात्मा तुम से प्रसन्न होगा।

अधिक पाप अज्ञान के कारण होता है। पाप करने वाला यह जानता ही नहीं कि यह कर्म पाप है या पुण्य। बार-बार पाप कर्म करते रहने से उसका अन्तःकरण इतना मलिन हो जाता है कि आत्मा की आवाज सुनाई ही नहीं देती।

चित्त में जब रजोगुण, तमोगुण की वृद्धि हो जाती है तब अहंकार, स्वार्थ, विषयों को भोगने की इच्छा, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि उत्पन्न हो जाते हैं। ये सारे पतन की ओर ले जाने वाले हैं।

दश विध पाप—**हिंसास्तेयान्यथा कामं पैशुन्यं परुषानृतम्। संभिन्नालाप व्यापाद्यमभिध्या दिग्विपर्ययः॥**

शारीरिक पाप—हिंसा, चोरी, परस्त्रीगमन

वाचिक पाप—चुगली, कठोर बोलना, असत्य और बक-बक करना।

मानसिक पाप—मन में किसी को मारने की इच्छा, दूसरे के धन को हड़पने की भाव और नास्तिकता।

जो पतन की ओर ले जाये अथवा जिससे बचना चाहते हैं वह पाप कहलाता है।

पाप के विषय में इतना जान लेने के पश्चात् अब मन्त्र का भावार्थ समझना सरल हो जायेगा। मन्त्र कहता है—

अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम्=हमने आज पाप पर विजय पा ली है। हमारी मनोकामना पूरी हुई। आज हम निष्पाप हो गये हैं। हम जाग्रतावस्था में जो पाप करते हैं अथवा स्वप्नावस्था में करते हैं वे पाप—**यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु।** जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है उसे ही प्राप्त हों। हम उस पाप को **तं वो जम्भे दध्मः** हे परमात्मा आपकी न्याय व्यवस्था में छोड़ते हैं। आप जैसा उचित हो वैसा ही कीजिये।

मन्त्र में पाप से छूटने का पहला उपाय बतलाया कि उसका चिन्तन ही न किया जाये। क्योंकि व्यक्ति जैसा मन में विचार करता है वैसा वाणी से बोलता है। जैसा वाणी से बोलता है, वैसा कर्म करता है और जैसा कर्म करता है वैसा ही बन जाता है। व्यक्ति जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल भी मिलेगा। यह नियम अन्यथा नहीं हो सकता तो फिर इस विषय में हम अनावश्यक चिन्ता क्यों करें।

दूसरा उपाय यह है कि हम सबको अपने आत्मा के समान ही चिन्तन करें। अर्थात् जैसा सुख-दुःख मुझे होता है वैसे ही दूसरों को भी होता है तो फिर मैं क्यों किसी को अनावश्यक पीड़ित करूँ। कोई मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करे तो मुझे कैसा लगेगा।

तीसरा उपाय यह है कि व्यक्ति को सोचना चाहिये कि यद्यपि लोगों की दृष्टि में तो मैं निष्पाप हूँ परन्तु परमात्मा तो मुझे देख रहा है और इस पाप कर्म का फल भी मुझे अवश्य ही मिलेगा। उसके यहाँ क्षमा करने का कोई प्रावधान नहीं है।

जाग्रत अवस्था में इस प्रकार का चिन्तन करने और सज्जनों की संगति में रहने से धीरे-धीरे पाप भावना दूर होती चली जाती है। जब हमारा चित्त शुद्ध हो जायेगा तो फिर स्वप्नावस्था में भी पापयुक्त, घात-पात, व्यभिचार, चोरी, हिंसा आदि के स्वप्न नहीं आयेंगे। क्योंकि व्यक्ति दिन में जैसा चिन्तन करता है, रात्रि में स्वप्न भी वैसे ही आते हैं। शयन के समय शिवसंकल्प के मन्त्रों का चिन्तन और गायत्री या ओंकार का जप करते हुये सो जाने से भी स्वप्न बहुत ही कम आयेंगे और कभी-कभार आयेंगे भी तो वे अच्छे ही होंगे, पतन की ओर ले जाने वाले नहीं।

यही मन्त्र ऋग्वेद के आठवें मण्डल में पाठ भेद से आया है—

अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम्। उषो यस्माद्दुष्वप्न्याद भैष्माप तदुच्छत्वनेहसो व ऊतय सुऊतयो व ऊतयः।।ऋ० ८.४७.१८

आज हम विजयी हुये हैं और हमने प्रातव्य को पा लिया है। हम निरपराध हो गये हैं। हे उषाओ! हमें इस दुःस्वप्न से पृथक् कीजिये। आप की रक्षा हमें निष्पाप बनाये।

बुरे स्वप्न प्रातःकाल अधिक आते हैं इसीलिये ब्राह्ममुहूर्त्त में उठ नित्य कर्मों से निवृत्त हो ईश्वरभक्ति, जप, प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिये। इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि जब बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा तो रजोगुण, तमोगुण के दूर हो जाने से राग-द्वेष की भावना स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

पाप से बचने का सबसे श्रेष्ठ और सरल उपाय यह है कि धर्म का आचरण किया जाये। **वितर्क बाधने प्रतिपक्ष भावनम्** (योग० २.३३) हिंसा के स्थान पर अहिंसा, असत्य के स्थान पर सत्य आदि का अभ्यास और इन पाप कर्मों को सब दुःखों का कारण जान उनसे दूर हो जाना चाहिये। - *क्रमशः*

विद्वानों एवं संन्यासियों का स्नेह मिलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनाक 22 जून, 2014

आर्ष गुरुकुल, आर्यसमाज किंग्जवे कैम्प, जी.टी.बी नगर दिल्ली-9 में रविवार 22 जून, 2014 को संन्यासियों, आचार्यों एवं ब्रह्मचारियों का स्नेह सम्मेलन एवं आचार्य बलदेव जी का सम्मान समारोह एवं एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी के विषय निम्न प्रकार होंगे-

1. राष्ट्र निर्माण में गुरुकुलीय छात्रों की संगठित भूमिका। 2. कम समय में अधिकाधिक आर्ष विद्वानों का निर्माण कैसे हो। 3. गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की शिक्षित वर्ग अर्थात् शासक, प्रशासक एवं शिक्षक वर्ग को महत्त्व एवं उपयोगिता का सम्यक बोध कैसे कराया जाए।

आप सब अधिकाधिक सख्या में पधारकर संगोष्ठी को सफल बनाएं।

- रामचन्द्र मीमांसक, आचार्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

मण्डी पुस्तक मेला

स्थान : पैडल ग्राउंड, मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

16 से 22 जून, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

-: निवेदक :-

***विनय आर्य**, महामन्त्री (दिल्ली सभा)* ***रामफल आर्य**, महामन्त्री, हि.प्र. सभा*

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

गतांक से आगे

आर्यसमाज मन्दिरों में गुरुकुल – एक नए युग का शुभारम्भ

– डॉ. मुमुक्षु आर्य

10. गौ पालन: गऊ माता की जय हम कहते हैं परन्तु गाय हम पाल नहीं सकते। दूध की पूर्ति हेतु 2-3 गाय रखना कुछ कठिन नहीं है। अतिरिक्त दूध बेच कर आय भी हो सकती है। आर्य समाज मंदिरों में यज्ञशाला जैसे आवश्यक है वैसे एक छोटी गौशाला भी होनी चाहिए जो सदस्यों-अधिकारियों, रोगियों एवं ब्रह्मचारियों को अमृत समान गाय के दूध का प्रबन्ध कर सके। महर्षि दयानन्द की गाय रक्षा की अपील पर हम इस प्रकार बहुत सीमा तक अमल कर सकते हैं। गोवध रोकने के लिए एक ठोस कदम इस प्रकार उठाया जा सकता है। प्रशासन अगर गौ रखने में बाधा बने तो उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। गुरुकुल के ब्रह्मचारी, गौ सेवा का कार्य भली प्रकार कर लेते हैं।

11. वैदिक पुस्तकालय का सुन्दर संचालन: प्राय: देखा जाता है कि आर्य समाजों में पुस्तकालय नाम की कोई चीज नहीं होती। होती है तो ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जो पुस्तकालय, वाचनालय को खुला रखें ताकि वहाँ से पुस्तके पढ़ने के लिये ली जा सकें अथवा बेची जा सकें। गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी अथवा आचार्य का पुस्तकालय/वाचनालय को सुन्दर रूप से चलाने में सहयोग लिया जा सकता है। कुछ प्रचार सामग्री व लघु पुस्तिकाएं पुस्तकालय से आने-जाने वालों को नि:शुल्क भी वितरित की जा सकती है।

12. नियमित वेद प्रचार: रिक्शा रूपी प्रचार वाहन लगभग 10-15 हजार रुपये में तैयार हो जाता है जिसके ऊपर ओ३म् का ध्वज, बाहर आर्य समाज एवं वेद सम्बन्धी जानकारी, भीतर वैदिक साहित्य, ट्रैक्ट, कैरोट, माईक आदि की व्यवस्था हो। प्रतिदिन सायं 4 बजे के पश्चात् पढ़ाई से निवृत होकर-2,3 ब्रह्मचारी इस प्रचार वाहन द्वारा 2-3 घंटे नगर में अच्छा प्रचार कर सकते हैं। और ऐसे आर्य समाज नौएडा में संचालित गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्राय: करते रहते है।

13. क्रांतिकारियों का निर्माण: आर्ष गुरुकुल नौएडा के ब्रह्मचारियों में राष्ट्र भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरने का प्रयास किया जाता है। हम आशा करते हैं कि हमारे ब्रह्मचारी राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर, भगतसिंह आदि नवयुवकों की तरह काले अंग्रेजों से मुक्ति दिलाने में अपनी जान तक लड़ा देंगे। प्रत्येक आर्य समाज में ऐसे ही नवयुवकों के निर्माण का प्रयास किया जाय तो वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान मिल सकता है। अधिकारियों व सदस्यों के अपने बच्चो से यह सब आशा रखना तो शायद उचित नहीं होगा। स्थानीय गुरुकुल के ब्रह्मचारी आर्य समाज की युवा शक्ति का प्रतीक सिद्ध होगी और हो रही है।

14. प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र का संचालन भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं स्थानीय वैद्य अथवा डाक्टर की सहायता से किया जा रहा हैं जिससे गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं आस-पास के लोगों को लाभ पहुंचता है। प्रारम्भिक चिकित्सा की शिक्षा भी विद्यार्थियों को दी जा रही है। योग्य वैद्य से आयुर्वेद की शिक्षा भी देने का प्रयास किया जा रहा है।

15. भजनीक: प्रचार हेतु योग्य भजनीकों का निर्माण भी संगीत शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। प्रत्येक शनिवार बाल सभा में भजन-प्रवचन एवं मंच संचालन का अभ्यास करवाया जाता है।

16. चन्दा संग्रह : आर्य समाज सदस्यों से चन्दा संग्रह में भी ब्रह्मचारी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

17. वानप्रस्थी एवं संन्यासियों का सदुपयोग: वानप्रस्थी भी गुरुकुलों में जाकर सहयोग कर सकते हैं और उनकी योग्यता व अनुभव का सदुपयोग किया जा सकता है।

18. अतिथि सत्कार: आर्य विद्वानों एवं संन्यासियों के आतिथ्य की समस्या समाजों में प्राय: बनी रहती है। गुरुकुल होने से अतिथि-यज्ञ बड़ी श्रद्धा से सम्पन्न होने लगता है।

19. नियमित साधना केन्द्र: अध्यापकों में एक योगाचार्य रखकर एवं सुन्दर ध्यान कक्ष का निर्माण कर सदस्य, अधिकारी, आम जनता एवं ब्रह्मचारी प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास कर सकता है। इससे आर्य समाज के प्रचार में बहुत सहायता मिलती है।

20. समिधा-सामग्री-हवनकुण्ड: सन्ध्या-हवन की पुस्तकों की बिक्री की सुविधा भी नियमित हो जाती है। इन वस्तुओं की प्राप्ति में प्राय: बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

खर्च व्यवस्था

1. मासिक सहयोगी सदस्य: प्रतिदिन के 4-5 रुपये के हिसाब से 100-150 के मासिक सहयोगी सदस्य बनना व बनाना कोई कठिन कार्य नहीं है। हमारे यहां 2-3 हजार मासिक कमाने वाले भी सदस्य बने हुए हैं। इस राशि का संग्रह भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी पढ़ाई समय के पश्चात् सुगमता से कर सकते हैं। सम्पन्न सदस्य, नागरिक, उद्योगपति तो 500 से 1000 रुपये मासिक के सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।

2. प्रचार वाहन: संस्कारों एवं समाचार पत्रों द्वारा प्रचार से जन सम्पर्क बढ़ाया जा सकता है। बहुत से सज्जन लोग गुरुकुलों को आटा दाल चावल आदि देने में प्रसन्नता महसूस करते हैं।

3. अन्न संग्रह: ग्रीष्म अवकाश में प्रतिवर्ष अन्न संग्रह किया जाता है जिससे वर्ष भर का अन्न कई बार संग्रहीत हो जाता है।

4. कुछ महानुभाव समय-समय पर एक समय के भोजन का प्रबन्ध करते रहते हैं जिससे खर्च में कमी आ जाती है। समाज के समस्त सदस्य भी इस प्रकार का योगदान कर सकते हैं।

5. कुछ महानुभाव गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्ति भी निश्चित कर देते हैं।

6. कुछ महानुभाव किसी एक ब्रह्मचारी का पूरा खर्च उठाने को तत्पर होते हैं।

7. विभिन्न संस्कारों से दक्षिणा जो एक ही पुरोहित को जाती थी अब संस्था को जाती है क्योंकि आचार्य लोग एक निश्चित दक्षिणा लेते हैं और यह कार्य शास्त्री कक्षा के विद्यार्थी भी करवा लेते हैं। कई बार संस्कारों से अच्छी आय हो जाती है।

8. स्थानीय योग्य सदस्य अथवा सेवानिवृत सदस्य नियमित रूप से अध्यापन कार्य में सहयोग कर खर्च में कमी कर सकते हैं।

9. पंजीकृत एवं कर मुक्त प्रमाण पत्र प्राप्त करने पर गुरूकुल को अच्छा दान प्राप्त हो सकता है।

10. सम्पन्न विद्यार्थियों से प्रतिमास 250-300 रुपये भोजन व दूध के लिए आ सकते हैं।

तथ्य :

1. मान्यता: महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, बनारस विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त कर निश्चित परीक्षाएं दिलाई जा सकती हैं।

2. शिक्षा के स्तर को ऊचा उठाने के लिए आचार्यो के साथ नियमित बैठकें और निश्चित परीक्षाएं सहायक सिद्ध होती है। गुरुकुल में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रबन्ध हेतु प्रयास किये जा सकते हैं।

3. समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि अपनी-अपनी आर्य समाजों में गुरुकुल खोलकर इस योजना का विस्तार करने में सहयोग करें एवं इस सर्वोत्तम एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली को नकारने की अपेक्षा इसको सफल बनाने एवं इसकी कमियों को दूर करने में तन-मन-धन से सहयोग करें। नि:सन्देह आर्य समाज संस्थाएं अपने परिसर में गुरुकुलों का जितनी अच्छी तरह संचालन कर सकती हैं उतनी अच्छी तरह शायद कोई और न कर सकें क्योंकि संस्था की एक सामूहिक शक्ति होती है और समय-समय पर आने वाली प्रत्येक कठिनाई का मिलकर हल कर सकते हैं। स्मरण रहे वर्त्तमान युग में जो गुरुकुलों में त्रुटियां दिखाई देती है उनका मुख्य कारण हमारा ही असहयोग, अश्रद्धा, दुष्प्रचार और उपेक्षा है। गुरुकुलों व डी0ए0वी0 संस्थाओं में कमियों को दूर करना अधिकारियों का परम् कर्तव्य है।

आर्य विद्वानों के इस योजना सम्बन्धी विचार:

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान पं0 छवि कृष्ण शास्त्री जी ने नौएडा के एक साप्ताहिक सत्संग में आयोजित अपने प्रवचन में एक बड़ी सुन्दर बात कही "वानप्रस्थाश्रम व गुरुकुल अगर वनों में संचालित होने कठिन हो रहे है तो आर्य समाज मन्दिरों में तो हो ही सकते है।" आर्ष गुरुकुल नौएडा के प्रथम वार्षिकोत्सव पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान डा0 महेश विद्यालंकार, डा0 प्रेमचन्द श्रीधर, गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति जी सूर्यदेव जी, डा0 शशिप्रभा कुमार, स्वामी विश्वानन्द जी ने आर्य समाज नौएडा की इस क्रान्तिकारी कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी ने भी इस योजना की सराहना करते हुए अन्य आर्य समाजों को इससे प्रेरणा लेने का अनुरोध किया। स्वामी ओमानन्द जी एवं स्वामी सत्यानन्द जी ने भी पूर्ण सहयोग

– शेष पृष्ठ 6 पर

..... जहां आर्य संस्कारों व दिनचर्या का लगातार कई वर्ष तक अभ्यास करवाया जाता है वहां अगर वह और कुछ न बन पाएं तो कम से कम पुरोहित का कार्य तो कर सकते हैं। अपने गाँवों में जाकर अपने घर के आगे पुरोहित का बोर्ड लगा दें तो एक दो संस्कार का मिलना कोई कठिन नहीं है। कुछ पुरोहित जो थोड़ा भजन व प्रवचन का भी अभ्यास कर लेते हैं तो उनकी 20 हजार की मासिक आय होती देखी गई है। इससे घर-घर में जो आर्य संस्कृति का प्रचार एवं सम्मान मिलता है उसका अपना बड़ा महत्व है। गुरूकुलों से शिक्षा प्राप्त कन्याओं को भी सफलता पूर्वक पुरोहित कार्य करते हुए देखा गया है। परिवारों को आर्य बनाने में इनका योगदान भी महत्त्वपूर्ण है दलित परिवारों के बालक-बालिकाएं गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त कर ब्राह्मण कोटि में आ जाते हैं और इस प्रकार उनका भविष्य तो और भी उज्ज्वल हो जाता है। ऐसे कई विद्यार्थी पुरोहित-उपदेशक आदि का बड़ा अच्छा कार्य कर रहे हैं।.....

..... कुछ लोग शंका करते है कि गुरुकुलों में बच्चे बस खाने-पीने के लिए आते हैं और कुछ बच्चे शिक्षा पूरी करने के बाद बेरोजगार होने पर गुरुकुलों के संचालको को बुरा-भला कहते हैं यह मात्र दुष्प्रचार है। स्कूलों-कॉलिजों में कुछ बच्चों की मात्र खेलों आदि में व स्वास्थ्य बनाने में रूचि नहीं होती है कुछ निर्धन परिवारों के बच्चों की यह इच्छा भी गुरुकुल पूरी करता है तो इसमें बड़ी अच्छी बात है। ऐसे बच्चे पुलिस व मिलिट्री आदि में जा सकते हैं। व्यायाम शिक्षक भी बन सकते हैं।.....

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीरो को पुरस्कार देते श्री रमेश अग्रवाल जी, महाशय धर्मपाल जी, सभ प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी, महामन्त्री विनय आर्य एवं अन्य।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीर समापन समारोह के अवसर पर शिविर में प्राप्त विभिन्न विद्याओं का प्रदर्शन करते हुए।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार में

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर्र दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार दिल्ली-95 में दिनांक 18 मई से 25 मई तक सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग 100 आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि नारी मातृशक्ति होती है। नारी के सम्मान के लिए केन्द्र सरकार को आवश्यक है कि उन्हें समुचित सम्मान देते हुए उनकी रक्षा के लिए कठोर कदम उठाए। इस अवसर पर उनकी पुत्रवधू श्रीमती ज्योति गुलाटी ने भी शिविर में पहुंचकर शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। शिविर की व्यवस्थाओं में सहयोग के लिए विद्यालय प्रबन्धक श्री प्रवीण भाटिया एवं श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया जी को भी स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली में

33वां वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

33 वाँ वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

आर्य समाज की सेवा में संकल्पित इंकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष मई में 15 दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन किया जाता है। आर्य समाज मन्दिर मेन बाजार, रानी बाग में 18 मई से 31 मई 2014 तक इस शिविर का 33 वाँ सत्र सम्पन्न हुआ। 90 वर्षीय माता प्रेमलता शास्त्री, महामंत्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की अध्यक्षता में आयोजित वैचारिक क्रान्ति शिविर में भारत के 10 प्रान्तों के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। असम, नागालैण्ड, उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली के छात्र-छात्राओं ने इस शिविर में बौद्धिक, शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति हेतु सुयोग्य गुरुओं एवं आचार्यों के सान्निध्य में प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर में वनवासी क्षेत्रों के बन्धुओं के लिए विशेष रूप से ग्रामीण उन्नति, छुआछूत उन्मूलन, सामाजिक समरसता, शैक्षिक उन्नति, बाल विवाह विरोध, लघु कुटीर उद्योग, पर्यावरण रक्षा, नैतिक संस्कार, पंच महायज्ञ, आर्ष ग्रंथ परिचय, पुरोहित प्रशिक्षण, अंधविश्वास उन्मूलन एवं शाकाहार प्रचार इत्यादि विषयों पर अनेक कार्यक्रम रखे गए।

18 मई 2014 सायं 6 बजे अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. की अध्यक्षता में शिविर का उद्घाटन हुआ। भव्य स्वागत एवं अभिनन्दन के साथ शिविरार्थियों को इस शिविर में प्रशिक्षण लेने हेतु शुभकामनाएँ दी गई। सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भी महाशय धर्मपाल जी का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं अन्य प्रतिनिधि श्रीमती उषा किरण कथूरिया, श्री सुरेन्द्र आर्य आदि गणमान्य महानुभावों ने अपना आशीष दिया।

रविवार 25 मई 2014 को सभी शिविरार्थी मित्रों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। इस संकल्प समारोह में माता-पिता, गुरुजनों एवं देवों के ऋण एवं कर्त्तव्यों के बोध को जानकारी के साथ चुकाने का संकल्प सभी शिविरार्थियों ने लिया। स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने इस अवसर पर सभी शिविरार्थियों को उद्बोधन एवं अपना आशीष प्रदान किया। मध्य प्रदेश के सांसद श्री दिलीपसिंह भूरिया जी का इस अवसर पर अभिनन्दन किया गया। श्री भूरिया जी ने संघ द्वारा आयोजित होने वाले सभी गतिविधियों को

- शेष पृष्ठ 7 पर

उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान महाशय धर्मपाल जी साथ में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। शिविर में पधारने पर प्रथम महिला पुलिस अधिकारी को आदिवासी टोपी पनाकर स्वागत करते आचार्य आनन्द जी एवं आचार्य जीव वर्धन शास्त्री।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के 33वें वैचारिक क्रान्ति शिविर में देश के विभिन्न भागों से पधारे आदिवासी कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद देते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं एम.डी.एच. परिवार के सदस्य श्री राजेन्द्र कुमार जी एवं आचार्य आनन्द आर्य जी एवं अन्य आर्यजन।

नव निर्वाचित सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी के शिविर में पधारने पर स्मृति चिह्न देकर सम्मानित शिविर संयोजक श्री जोगेन्द्र खट्टर साथ में हैं दिल्ली सभाके प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, उ. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के उप प्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता एवं अन्य आर्य जन।

पृष्ठ 3 का शेष

आर्यसमाज मन्दिरों में गुरुकुल .....

का आश्वासन दिया। मूर्धन्य विद्वान सत्यानन्द वेदवागीष जी के कथनानुसार अगर इस प्रकार सब आर्य समाजें छोटे-छोटे गुरुकुलों का स्वरूप ले लें तो वास्तव में आर्य समाज भवनों का यथार्थ उपयोग हो सकता है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी रामचन्द्रराव बन्देमातारम जी ने आर्य समाज मन्दिर में गुरुकुल की स्थापना पर विशेष रूप से पधार कर आशीर्वाद व सहयोग का आश्वासन दिया। मन्त्री डॉ0 सच्चिदानन्द शास्त्री व कई अन्य विद्वान एवं पत्र-पत्रिकाएं इस योजना की समय-समय पर प्रशंसा करते रहे हैं।

कुछ अन्य प्रश्नोत्तर:

1. कुछ लोग तर्क देते हैं कि पब्लिक स्कूलों के विद्यार्थी अधिक चुस्त होते हैं। इसमे पहली बात तो यह है कि सभी बच्चे चुस्त नहीं होते। प्रत्येक संस्था में प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति होते हैं। गुरुकुलों में भी कई प्रकार के विद्यार्थी होते हैं 'मेधावी एवं मन्द बुद्धि वाले। परन्तु देखने में यह आया है कि कुछ लोग केवल शरारती और अत्यन्त मन्द बुद्धि वाले बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश करवाते हैं और मेधावी बच्चों को पब्लिकों स्कूलों में। दूसरे चुस्त से अभिप्राय अंग्रेजी बोलना, लिखना, पैन्ट-कोट-जुराब-बूट आदि पहनना नहीं होना चाहिए। जो कुश्ती-व्यायाम, कठिन दिनचर्या एवं संस्कारों से सुसज्जित-बलवान होता है उसे ही चुस्त-सभ्य कहना उचित है। मेधावी बच्चों को भी गुरूकुल में पढ़ने का अवसर दिया जाय तो वे आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कर वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, नेता व प्रचारक बन सकें। उनमें कुछ संकाराचार्य-दयानन्द जैसे उच्चकोटि के महामानव, मार्गदर्शक, आचार्य एवं सन्त भी हो सकते हैं।

2. कुछ लोग गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थकों से प्रश्न करते है कि प्राय: उनके अपने बच्चे गुरुकुलों में क्यों नहीं पढ़ते? उत्तर:- इसमें ऐसा नहीं है। कई महानुभावों ने अपने बच्चों को गुरुकुलों में प्रवेश करवाया हुआ है। कुछ शिक्षा पुरी कर विश्वविद्यालयों, कालिजों में अध्यापक, धर्मशिक्षा, रीडर, कुलाधिपति आदि पदों पर सुशोभित हैं। कुछ प्रचार आदि कार्यों में व्यस्त है। जो अभिभावक चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर पाते उसमें बच्चों की अपनी व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता, इच्छा शक्ति, संस्कार आदि मुख्य कारण हैं। पूर्व में स्पष्ट कर आए हैं कि जो बच्चे आचार्य, उपदेशक, प्रचारक, पुरोहित बनना नहीं चाहते उन पर अनावश्यक दबाव डालना सर्वथा अनुचित है। उन्हें डी0ए0वी0 कक्षाओं में प्रवेश करवाया जाए। ऐसे विद्यार्थी कम से कम कक्षा दस तक गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करें तो अधिक अच्छा है।

3. कुछ लोग गुरुकुलों में पढ़ रहे बच्चों के भविष्य के बारे में चिन्तित रहते हैं। वास्तव में स्कूल व कॉलेजों के विद्यार्थियों के भविष्य की चिन्ता अधिक होनी चाहिए क्योंकि बी0ए0, एम0ए0, बी0एस0सी0, डाक्टर, इंजीनियर, वकील, आदि की बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त कर भी लाखों नवयुवक बेरोजगार घूम रहे हैं। कई तो इतना परिश्रम करके व प्रतियोगिताओं में भाग लेने के पश्चात् भी कोई ढंग की नौकरी नहीं मिलती तो आत्म हत्या कर लेते हैं। परन्तु गुरूकुलों में पढ़ रहे बच्चों में ऐसी कमजोरी कदापि नहीं पायी जाती। जहां आर्य संस्कारों व दिनचर्या का लगातार कई वर्ष तक अभ्यास करवाया जाता है वहां अगर वह और कुछ न बन पाएं तो कम से कम पुरोहित का कार्य तो कर सकते हैं। अपने गाँवों में जाकर अपने घर के आगे पुरोहित का बोर्ड लगा दें तो एक दो संस्कार का मिलना कोई कठिन नहीं है। कुछ पुरोहित जो थोड़ा भजन व प्रवचन का भी अभ्यास कर लेते हैं तो उनकी 20 हजार की मासिक आय होती देखी गई है। इससे घर-घर में जो आर्य संस्कृति का प्रचार एवं सम्मान मिलता है उसका अपना बड़ा महत्त्व है। गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त कन्याओं को भी सफलता पूर्वक पुरोहित कार्य करते हुए देखा गया है। परिवारों को आर्य बनाने में इनका योगदान भी महत्वपूर्ण है दलित परिवारों के बालक-बालिकाएं गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त कर ब्राह्मण कोटि में आ जाते हैं और इस प्रकार उनका भविष्य तो और भी उज्ज्वल हो जाता है। ऐसे कई विद्यार्थी पुरोहित-उपदेशक आदि का बड़ा अच्छा कार्य कर रहे हैं। कुछ लोग शंका करते है कि गुरुकुलों में बच्चे बस खाने-पीने के लिए आते हैं और कुछ बच्चे शिक्षा पूरी करने के बाद बेरोजगार होने पर गुरुकुलों के संचालको को बुरा-भला कहते हैं यह मात्र दुष्प्रचार है। स्कूलों-कॉलिजों में कुछ बच्चों की मात्र खेलों आदि में व स्वास्थ्य बनाने में रूचि नहीं होती है कुछ निर्धन परिवारों के बच्चों की यह इच्छा भी गुरुकुल पूरी करता है तो इसमें बड़ी अच्छी बात है। ऐसे बच्चे पुलिस व मिलिट्री आदि में जा सकते हैं। व्यायाम शिक्षक भी बन सकते हैं। क्रान्तिकारी वीर बन सकते हैं। स्कूलों-कॉलिजों से शिक्षा प्राप्त बेरोजगार नवयुवक सरकार की कटु आलोचना, आन्दोलन, आत्महत्या करते हैं तो सरकार द्वारा स्कूल-कॉलिज बंद करना विल्कुल हास्यास्पद होगा।

कुछ लोग शंका करते है कि गुरुकुल शिक्षा व्यावहारिक नहीं वहाँ अंग्रेजी, विज्ञान, गणित आदि विषय नहीं पढ़ाए जाते, यह भी सर्वथा दुष्प्रचार है। गुरूकुल शिक्षा सबसे अधिक व्यावहारिक है जो पूरे जीवन में काम आती है। पुरोहित आदि के व्यवसाय से सीधा-व-तुरन्त रोजगार प्रदान करती हैं। अंग्रेजी-विज्ञान व गणित आदि विषय भी पढ़ाये जाते हैं बस कुछ कमी है तो पढ़ने वालों की और कुछ कमी है स्वयं-सेवकों व पढ़ाने वालों की।

कुछ लोगों का विचार है कि गुरूकुलों में ब्रह्मचारियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता। यह भी मात्र दुष्प्रचार है। कभी-कभी किसी दुष्चरित्र विद्यार्थी अथवा शिक्षक के कारण अप्रिय घटना घट सकती है। कठोर अनुशासन व्यवस्था, अधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण व वानप्रस्थ संन्यासी लोगों के सहयोग से इस प्रकार की अप्रिय घटनाओं को रोका जा सकता है। स्कूलों-कॉलिजों में इस प्रकार की घटनाएं कहीं अधिक है। वैदिक शिक्षा, शुभ संस्कार, आध्यात्मिक कार्यक्रमों एवं दूरदर्शन द्वारा अश्लील कायक्रमों पर रोक से ही चरित्र का उत्थान हो सकता है। कुछ स्कुलो में तो प्राइमरी कक्षा के छोटे-छोटे विद्यार्थियों को अश्लील हरकतें करते एवं गाने गाते हुए देखा गया है। सह शिक्षा से अग्नि में घी का काम करती ही है। समाज मंदिरों में पुरोहित अकेले रहते है। सप्ताहभर किसी सदस्य को समाज में जाने का कई बार समय तक नहीं मिलता। अकेलेपन में और किसी का डर न होने से कुछ पुरोहितों को भी भटकते देखा गया है। वास्तव में घटनाएं-दुर्घटनाएं प्राय: प्रत्येक संस्था व प्रणाली में होती रहती है परन्तु उसके कारण संस्थाएं बंद नहीं की जाती। डी0 ए0 वी0 संस्था के एक कार्यक्रम में 500 से अधिक बच्चे जलकर राख हो गये परन्तु इसके कारण उत्सव-सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होने बन्द नहीं हो गये। घटना-दुर्घटनाओं की जाँच के पश्चात् उन्हें भविष्य में रोकने के उपायों पर विचार किया जाता है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि कुछ दृष्ट प्रवृति के लोग षड़यंत्र कर संचालकों अथवा शिक्षकों पर चरित्रहीनता का लांछन लगाने में भी संकोच नहीं करते। महर्षि दयानन्द व महात्मा श्रद्धानन्द को भी अपमानित करने का प्रयास किया गया। संघर्षशील व्यक्ति कभी बाधाओं से नहीं घबराते। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे इस कार्य में सहाई होवें। आशा है कि ऋषि भक्त आर्य महानुभाव इस योजना के महत्त्व को आत्मसात् कर इस पर कार्य करना प्रारम्भ करेंगें। कहीं-कहीं अधिकारियों ने इस प्रकार के प्रयास प्रारम्भ भी कर दिये हैं। भूतपूर्व इमाम एवं आर्य प्रचारक पं. महेन्द्र पाल आर्य जी ने इस योजना से प्रेरणा पाकर बंगाल में आर्य समाज निर्माण हेतु मिली भूमि पर आर्ष गुरुकुल प्रारम्भ कर दिया है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
विद्यालय विभाग (हरिद्वार), उत्तराखण्ड- 249404

प्रवेश सूचना

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग हरिद्वार (केवल छात्रों के लिए) एवं कन्या गुरुकुल, 60 राजपुरा रोड, देहरादून (केवल कन्याओं के लिए) में सत्र 2014-15 हेतु कक्षा 1 से 9 तक एवं कक्षा 11 में प्रवेश प्रारम्भ है।

वैदिक संस्कारों पर आधारित दिनचर्या, एन.सी.आर.टी. पाठ्यक्रम, छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षण संस्था।

विज्ञान वर्ग में पी.सी.एम. एवं पी.सी.बी. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग में अध्ययन की सुविधा। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम। विशेष- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तीनों भाषाएं अनिवार्य हैं एवं उत्तम संस्कारों हेतु धर्म शिक्षा भी अनिवार्य है।

प्रवेश अवधि - 20 अप्रैल, 20144 से 20 जुलाई, 2014 तक प्रत्येक रविवार को प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होगी। सम्पर्क करें

बालकों हेतु मो.9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378

बालिकाओं हेतु 0135-2748334, 9760183502, 9761219696, 9759348510

Website : www.gurukulkangrividyalaya.org

- जय प्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

"भजन संध्या" का आयोजन

आर्यसमाज करोल बाग, नई दिल्ली में समाजसेवी सुरेश ग्रोवर के जन्मोत्सव पर "भव्य भजन-संध्या" का आयोजन हुआ। आचार्य कंचन कुमार ने कहा- सुरेश ग्रोवर का जीवन मानवता व परोपकार को समर्पित था। उन्होंने अनेक प्रतिभाशाली युवाओं व जरूरतमंद लोगों को जीवन में आगे बढ़ाया। इस अवसर पर माता शीला ग्रोवर, विजय भाटिया, आचार्य मायाराम, राकेश ग्रोवर, अनुरूद्ध शास्त्री ने भी कर्मयोगी सुरेश व उनके प्रेरणास्रोत चमनलाल ग्रोवर के जीवन पर प्रकाश डाला। यज्ञ व प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शशि भूषण मल्होत्रा जी बने
शशि मुनि वानप्रस्थ

आर्यसमाज सन्देश विहार दिल्ली के प्रधान श्री शशिभूषण मल्होत्रा जी ने अपने पूज्य ताऊजी महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ के पद्चिह्नों पर चलते हुए स्वामी सत्यपति जी महाराज सेवैदिक धर्म के अनुसार जीवन के तीसरे आश्रम वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ग्रहण की। अब श्री मल्होत्रा जी शशि मुनि आर्य के नाम से जाने जाएंगे। सर्वसाधारण से निवेदन है कि अब उन्हें शशि मुनि आर्य के नाम से ही सम्बोधित करें। आशा है श्री शशिमुनि आर्य जी वानप्रस्थाश्रम के अनुसार स्वाध्याय, शास्त्र विचार, स्वात्मा-परमात्मा के साक्षात्कार से समाज को लाभान्वित करेंगे।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली-60

प्रधान : श्री अशोक सहगल
मन्त्री : श्री सतीश चन्द्र मैहता
कोषाध्यक्ष : श्री सतीश कुमार

आर्यसमाज रामगली सी-13 हरि नगर घंटाघर नई दिल्ली

प्रधान : श्रीमती राजेश्वरी आर्या
मन्त्री : श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री हृदेश शर्मा

आर्यसमाज हौजखास ए-21, नई दिल्ली-16

प्रधान : श्रीमती सुमेधा विद्यालंकार
मन्त्री : श्री विद्याभूषण गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता

आर्यसमाज राम नगर गुड़गांव (हरियाणा)

प्रधान : श्री ओम प्रकाश चुटानी
मन्त्री : श्री राधाकृष्ण सोलंकी
कोषाध्यक्ष : श्री भगवानदास मनचन्दा

आर्यसमाज राधाकुण्ड गोण्डा (उ.प्र.)

प्रधान : श्री रामप्रताप सिंह
मन्त्री : श्री विजय कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह

समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद के तत्त्वावधान में
स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती का
जन्मदिवस एवं वैबसाइट लोकार्पण

रविवार 15 जून, 2014
यज्ञ : प्रात: 8 से 10 बजे
ब्रह्मा : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
भजन : पं. सत्यपाल पथिक, श्री राजेश श्रीमती सुकृति एवं श्री अविरल
सम्मेलन : स्वामी दीक्षानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश
अध्यक्ष : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
मुख्य वक्ता : आचार्य सत्यप्रिय, डॉ. गणेशदत्त शर्मा, श्रीमती प्रेमलता आर्या एवं कर्नल रवि भटनागर।
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- राजेन्द्र भटनागर, सचिव

निविदा सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 अपने दो प्रचार वाहन **मारुति स्टीम** - डी.एल. 9 सी.आर. 1365 एवं **मारुति वैन** - डी. एल. 2 सी. ए.ए. 3330 के विक्रय करना चाहती है। जो सज्जन/संस्था इन्हें खरीदना चाहें वे कभी भी किसी भी कार्य दिवस में दोपहर 12 बजे से सायं 6 बजे के मध्य अपने रेट दे सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए मो. 9958174441 पर सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

सुपौत्रियों ने किया नाम रोशन

आर्यसन्देश साप्ताहिक के पूर्व व्यवस्थापक एवं आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के संरक्षक श्री सुशील महाजन जी की सुपौत्री कु. रिया महाजन ने कक्षा 10वीं की परीक्षा में 98% अंक प्राप्त किए हैं। इसी के साथ श्री महाजन जी के बड़े भाई स्व. श्री विद्या भूषण महाजन जी की जुड़वा सुपौत्रियां जोकि जन्म से चक्षुहीन हैं ने 12वीं की परीक्षा में 94% और 92% अंक प्राप्त करके परिवार का नाम रोशन किया है। आर्य सन्देश परिवार की ओर से श्री महाजन जी का एवं उनकी सुपौत्रियों को हार्दिक बधाई।

वधू चाहिए

आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ के सदस्य श्री ओ३म् प्रकाश शर्मा, गौड ब्राह्मण, गौत्र सांख्यान, विधुर - 3 वर्ष की एक बेटी है, जन्मतिथि 21/10/84 कद 5'8'' डबल एम.ए. बी.एड.,एजूकेशन ग्रुप, मेरठ में टीचर व मीडिया इंचार्ज, मासिक 16000/- के लिए योग्य वधू की आवश्यकता है। कोई जाति बन्धन नहीं। एक बच्चा भी स्वीकार्य है। सम्पर्क करें-

मो. नं. 09837220364
ईमेल : ops364@gmail.com

वैचारिक क्रान्ति के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

पृष्ठ 5 का शेष

33वां वैचारिक क्रान्ति शिविर .....

पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

गुरुवार 29 मई 2014 को भारत की प्रथम आई.पी.एस. महिला गौरव डा. किरण बेदी जी के शिविर में आगमन होने पर सभी शिविरार्थियों का उत्साह बढ़ा। डा. बेदी ने शिविरार्थी बन्धुओं को प्रेरणा दी कि जीवन में संघर्ष, स्वाध्याय और संकल्प के सहारे आप भी अपनी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर किरण बेदी जी का भव्य स्वागत किया गया।

शुक्रवार 30 मई 2014 को सभी शिविरार्थियों को दिल्ली भ्रमण कराया गया। दिल्ली भ्रमण हेतु संघ की ओर से 3 बसों का प्रबन्ध किया गया था। बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ खुशियाँ मनाते हुए सभी ने भ्रमण का आनन्द लिया।

शनिवार 31 मई 2014 को सायं 6 बजे, रानीबाग समुदाय भवन में शिविर का 'समापन समारोह' आयोजित किया गया। स्वामी सौम्यानन्द जी एवं स्वामी शान्तानन्द जी के सानिध्य में इस समारोह का शुभारंभ हुआ। दिल्ली के सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी का इस अवसर पर स्वागत किया गया। सभी परीक्षा परिणाम में सर्वोपरि अंक पाने वाले शिविरार्थियों को इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ब्र. राजसिंह आर्य एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर अपना आशीर्वाद दिया। समारोह में सर्वश्री देवराज अरोडा (निगम पार्षद) श्री सुदेश भसीन (पूर्व पार्षद), श्यामलाल गर्ग (पूर्व विधायक) शशिदत्त जेटली, चमनलाल शर्मा, सतीराम (बी.टी.डब्ल्यू) डा. सुषमा आर्या एवं भव्य अभिनन्दन के साथ महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) प्रधान जी ने अपना आशीर्वाद दिया।

शिविरार्थियों को महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन में सदैव उच्च बढ़ने के लिये 1. मेहनत करना 2. ईमानदार बनना 3. मीठा बोलना 4. ईश्वर कृपा 5. माता-पिता का आशीर्वाद 6. जनता का प्रेम प्राप्त करना।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने 15 दिन चलने वाले इस शिविर में सभी शिविरार्थीयों को प्रेरणा दी एवं चार सूत्र दिए 1. रुकना नहीं 2. थकना नहीं 3. झुकना नहीं. 4. बिकना नहीं।

सभी शिविर में आर्य समाज रानी बाग एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के समस्त पदाधिकारियों सर्वश्री धर्मपाल गुप्ता, माता ईश्वर रानी महता, राज मल्होत्रा, राजीव आर्य, अंचना चावला, यज्ञदत्त आर्य, दिनेश शर्मा, कृष्ण कुमार साहनी अशोक कालड़ा, महेश आर्य, संजय सेठी, तथा कार्यकर्त्ताओं में सर्वश्री सुषमा चावला, भारती पसरीजा, प्रवीण कुमार आर्य, संजय आर्य, किशोर शर्मा, अतुल शर्मा, माता स्वर्णा जी, संजय सेतिया, मैथिली शर्मा एवं आर्य गुरुकुल रानी बाग के सभी छात्राओं ने विशेष सहयोग किया।

शिविर को सफल बनाने में देशभर से पधारे हुए गुरुजन स्वामी शान्तानन्द जी, आचार्य जीववर्धन शास्त्री, श्री रमाशंकर शिरोमणी, संजय आर्य, धर्मवीर आर्य, आचार्य विश्वमित्र, पं. जैमिनी शर्मा, श्रीमती भुमिसूता वेदालंकार, योगेश शर्मा, होलीराम आर्य, माता अंचना चावला, माता उषा किरण आर्या, बहन भावना जी, पं. रामनिवास शास्त्री जी, पं. श्यामलाल शास्त्री एवं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द प्रकाश आर्य जी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर की सफलता हेतु आर्यसमाज रेलवे रोड, शकूरबस्ती एवं आर्य समाज सैनिक विहार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।-*जोगेन्द्र सिंह खट्टर, संयोजक*

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रूचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैकडों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विक्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए पर you tube जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भवि य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

- प्रचार मन्त्री

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी के जन्मोत्सव पर परिचर्चा

15 जून, 2014 : सायं 6 से 7:30 बजे : आर्यसमाज रोहिणी, सै.-7
वक्ता : डॉ. विवेक आर्य
विषय : बिस्मिल और आस्तिकतावाद

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 जून, 2014 से रविवार 15 जून, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12/13 जून, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 जून, 2014

"वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्व के इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार की गई है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अत: इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें–

वैदिक प्रकाशन विभाग,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001,
फोन – 011–23360150, 9540040339

प्रतिष्ठा में,

अत्यावश्यक सूचना : स्थगन सूचना
8वां आर्य परिवार विवाह परिचय सम्मेलन

समस्त आर्य परिवारों को सूचित किया जाता है कि जून में सभी रिकार्डों को तोड़ती हुई अत्यधिक गर्मी होने एवं रेलवे में आरक्षण सेवा उपलब्ध न मिल पाने के कारण दिनांक **15 जून, 2014 को आर्यसमाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र.)** में आयोजित होने वाला 8वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन स्थगित कर दिया गया है। **अब यह सम्मेलन रविवार 28 सितम्बर, 2014 को आर्यसमाज मल्हार गंज इन्दौर में ही आयोजित किया जाएगा।** दिल्ली सम्मेलन की तिथियों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। आर्यजनों को हुई असुविधा के लिए खेद है। – ***अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)***

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

– सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह